सुहाने सपने का अंत!

महेंद्र सिंह धोनी शायद भारतीय क्रिकेट इतिहास के सबसे महान खिलाड़ी न हों लेकिन उनकी गिनती हमेशा ही देश के सबसे महत्त्वपूर्ण क्रिकेटर के तौर पर होगी। बता रहे हैं ध्रुव मुंजाल

कभी-कभार आंखों को भींचना, खीझ पैदा करने की हद तक बार-बार ग्लव्स को खोलना और फिर पहनना, स्टंप के पीछे खड़े होते समय अपने सिर को हल्का सा टेढ़ा रखना, आसमान की तरफ सिर उठाकर देखना, बायीं आंख के किनारे को अपने अंगूठे से रगड़ना और अपने कंधों को झटके के साथ गोल-गोल उचकाना। ये भाव-भंगिमाएं उस शख्स की हैं जिसे किसी डेंटल चेयर पर हफ्ते भर के लिए जबरन बिठा दिया गया हो। लेकिन उस शख्स का चेहरा रहस्यमयी, शांति से भरपूर और किसी देवता सरीखा है। शरीर भले ही बेचैनी से ओतप्रोत हो लेकिन उसका चेहरा युद्ध के लिए तैयार नजर आता है। लेकिन यह अजीबोगरीब विरोधाभास ही उस शख्स की खासियत है जिसका नाम महेंद्र सिंह धोनी है।

ओल्ड ट्रैफर्ड की उस उदास-सी दुपहरी में धोनी का चेहरा अपने करियर के पहले मैच में बांग्लादेश के खिलाफ हुए रनआउट के बाद शायद पहली बार कुछ और ही भाव बयां कर रहा था। इन दोनों घटनाओं के बीच साढ़े चौदह साल का लंबा वक्त निकल चुका था लेकिन उस समय कुछ तो अलग था। मार्टिन गप्टिल के शानदार थ्रो के चलते कई साल बाद रनआउट हुए धोनी जब अपनी बगल में बल्ला दबाकर पैविलियन की तरफ लौटे तो उनका चेहरा उनके भीतर की निराशा को छुपा पाने में नाकाम हो रहा था। नजर तो नहीं आया लेकिन आंसू ही उस भाव को व्यक्त कर सकता था। धोनी शायद पोकर (ताश का एक खेल) के सबसे महान खिलाड़ी होते लेकिन वह भी इस बार अपने मन के भाव चेहरे पर आने से नहीं रोक पाए। स्टेडियम के भीतर मौजूद दर्शक भी इस गहन वेदना में धोनी के साथ शरीक थे।

माइकल जॉर्डन का मानना था कि बास्केटबॉल के मुकाबलों में विजयी शॉट मारना ही उनकी नियति थी और उनका जन्म ही इसके लिए था। उसी तरह धोनी भी इस धरती पर विजयी रन बनाने के लिए ही पैदा हुए थे। उनके भीतर घबराहट एवं उतार-चढ़ाव से भरे माहौल में भी असीम शांति और किसी म्यूजिक कंसर्ट में भी एक ज़ेन भिक्षु जैसा भाव रहा है। धोनी और फिनिश लाइन शायद हमारे दौर की सबसे खूबसूरत प्रेम कहानी रही है।

धोनी के बारे में सबसे खास बात यह है कि उन्होंने हम सभी को यकीन करने वाला बना दिया। यकीन इतना कि कोई भी लक्ष्य पहुंच के बाहर नहीं लगता है। और न्यूज़ीलैंड के खिलाफ खेले गए उस मैच में भी धोनी ने अपने उसी अंदाज में हम सबके भीतर वही यकीन जगा दिया था। कीवी तेज आक्रमण के आगे भारत के शीर्ष क्रम के बुरी तरह नाकाम हो जाने के बाद यही लगा कि शायद सितारों ने भी उम्रदराज हो चले इस लड़ाके के पक्ष में गोलबंदी कर ली है। यही लग रहा था कि किस्मत धोनी को वह अनूठा मौका दे रही है जब नामुमकिन हालात से वह अपनी टीम को जीत के दरवाजे तक पहुंचाएं। यह उनके आलोचकों को हमेशा के लिए चुप कराने का शायद आखिरी मौका होता। क्रीज पर मौजूद रहने तक वह विपक्षी गेंदबाजों की धार कुंद करते रहे और धारा के विपरीत बहते हुए भी अपनी टीम को जीत की तरफ ले जाने में लगे रहे। लेकिन एक गलत आकलन ने उन्हें गोता लगाने के लिए मजबूर कर दिया। हालात किसी यूनानी साहित्य के दुखद अंत जैसे थे। इस पारी का अंत बेरहम एवं बदकिस्मती से भरपूर था। हालांकि एक वक्त वह भी था जब धोनी धीमा खेलते हुए टीम को जीत के मुहाने तक पहुंचाने के बजाय शुरू से ही धावा बोलने में यकीन रखते थे। एक दशक पहले का लंबे बालों वाला वह युवा तो मानो भारत में विकेटकीपर-बल्लेबाजों का पैमाना बदलने के लिए आया था। धोनी ने यह तय किया कि उन्हें केवल विकेट के पीछे ही खड़ा नहीं होना होगा बल्कि बल्ले के साथ निधड़क होकर खेलना होगा। धोनी ने खुद को इस शैली का प्रतीक बनाकर पेश किया। चाहे वह 2005 में पाकिस्तान के खिलाफ विशाखापट्टनम में खेली गई धुआंधार पारी हो या उसके छह महीने बाद जयपुर में श्रीलंका के खिलाफ मचाया गया तूफान हो। भले ही उनका खेलने का अंदाज आंखों को बहुत अच्छा न लगे लेकिन वह कारगर बहुत रहा है।

यह कहना वाजिब ही होगा कि भारतीय क्रिकेट में धोनी नहीं होते तो ऋषभ पंत भी शायद नहीं नजर आते। धोनी न होते तो पंत ने ग्लव्स ही नहीं पहने होते और न ही उस तरह बल्लेबाजी कर रहे होते। देश के लाखों गांवों एवं कस्बों में भी रहने वाले ऐसे लाखों युवा हैं जो धोनी को अपना रोलमॉडल मानते रहे हैं और उनके जैसा स्वभाव एवं करिश्मा जगाने की उम्मीद करते हैं।

दरअसल धोनी के घनघोर प्रशंसकों के चलते 'धोनी पंथ' जैसी रोचक परिघटना भी देखने को मिली है। कुछ साल पहले तक धोनी की पूजा दिल की गहराई से की जाती थी लेकिन कभी-कभार ही उसका प्रदर्शन होता था। उनका दर्जा इंसानियत को बचाने के लिए निकले किसी सुपरहीरो का नहीं बल्कि एक विनम्र अगुआ का था। निश्चित रूप से अब उन्हें किसी अवतार की तरह प्यार किया जाता है। उनकी हरेक सफलता की गूंज आसमान तक सुनाई देती है जबकि हरेक नाकामी का बचाव पूरी निष्ठा के साथ किया जाता है। हालत यह है कि केवल धोनी को मैच प्रैक्टिस करते हुए देखने के लिए भी पूरा स्टेडियम भर जाता है। अगर किसी बल्लेबाज के बाद धोनी के मैदान पर आने की संभावना होती है तो उस बल्लेबाज के आउट होते ही पूरा स्टेडियम धोनी-धोनी की गूंज से पट जाता है। सोशल मीडिया ने इस दीवानगी को शायद बढ़ाने का ही काम किया है। यह अलग बात है कि धोनी भारतीय खेल इतिहास के सबसे लोकप्रिय खिलाड़ी का तमगा कभी का हासिल कर चुके हैं। इसकी बानगी हमें वर्ष 2008 में उस समय भी देखने को मिली थी जब धोनी रांची में अपने पुराने करीबी छोटू 'भैया' की दुकान पर गए थे। इसकी भनक लगते ही हजारों लोग उस दुकान के बाहर जमा हो गए थे। ऐसे में धोनी को लोगों की भीड़ से बचाने के लिए छोटू भैया ने उन्हें तीन फुट ऊंची टांड पर छिपा दिया था। छोटू भैया धोनी के नाम पर बनी फिल्म में भी नजर आए थे।

लगभग उसी समय धोनी को क्रिकेट के तीनों प्रारूपों के लिए भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया था। लेकिन इस फैसले का असर यह हुआ कि धोनी ने खुद को आक्रामक बल्लेबाज से पारी को मजबूती देने वाले बल्लेबाज के तौर पर ढाल लिया। उनके बल्ले से अब जोखिम भरे शॉट कम निकलने लगे। उनके बल्ले से निकलने वाले शॉट देखकर ऐसा लगता था मानो कोई मंझा हुआ सर्जन अपने मरीज के सीने पर बहुत ही करीने से चाकू चला रहा है। हालांकि आक्रामकता में आई इस कमी के बावजूद गेंद पर जोरदार प्रहार करने की क्षमता बदस्तूर कायम रही लेकिन उसका प्रदर्शन टीम की जरूरत होने पर ही होता था। इस प्रक्रिया में धोनी क्रिकेट इतिहास के मास्टर फिनिशर बनकर सामने आए जो अपने फौलादी इरादों और काबिलियत के दम पर टीम को जीत के दरवाजे तक पहुंचा ही देता था। भले ही विराट कोहली ने पिछले कुछ वर्षों में लक्ष्य का सफलतापूर्वक पीछा करने की कला को नए मुकाम पर पहुंचा दिया है लेकिन कोहली ने केवल धोनी के दिखाए मार्ग को ही सुगम बनाया है। मैच की स्थिति समझना, विपक्षी टीम की ताकत एवं कमजोरी परखना, तेज बल्लेबाजी के लिए अनुकूल समय का सही अंदाजा लगाना और फिर उस रणनीति को अपनी असाधारण प्रतिभा के दम पर अंजाम तक पहुंचाना। न्यूज़ीलैंड के खिलाफ खेले गए इस मुकाबले में भी धोनी ने काफी सूझबूझ दिखाई थी। भले ही आलोचक यह कहते रहें कि धोनी ने अंतिम ओवरों के लिए बड़ा स्कोर छोड़कर गलती की थी लेकिन धोनी ने अपने प्रहार के लिए निशाना तय किया हुआ था। मुख्य गेंदबाजों के ओवर का कोटा पूरा हो जाने के बाद मैच का 50वां एवं अंतिम ओवर जिम्मी नीशम से कराए जाने की संभावना थी और धोनी ने यही तय किया था कि वह उस ओवर में जरूरी रन बना लेंगे।

लेकिन 49वें ओवर में एक सटीक थ्रो ने उन्हें रनआउट कर दिया और वह अपनी रणनीति को अंजाम देने से वंचित रह गए। दुख की बात यह है कि हम कभी नहीं जान पाएंगे कि धोनी वाकई में भारत को जीत दिला पाते या नहीं?

जोहानसबर्ग, ब्रिसबेन, मुंबई, बर्मिंघम जैसे शहरों में धोनी ने सफलता के कई मुकाम हासिल किए हैं। दुनिया का नंबर एक वनडे बल्लेबाज बनना, अपनी कप्तानी में भारत को टेस्ट एवं वनडे में दुनिया की अव्वल टीम बनाना जैसी कई सफलताएं उनके नाम पर दर्ज हैं। लेकिन धोनी का नाम भारत के सीमित ओवरों के क्रिकेट इतिहास की चार बेहतरीन जीतों के साथ अपरिहार्य रूप से जुड़ा हुआ है। जोहानसबर्ग में ही 2007 के टी-20 विश्व कप का खिताबी मुकाबला खेला गया था और युवा कप्तान के तौर पर धोनी ने भारत को विश्व चैंपियन बनाया था। उस रोमांचक खिताबी मुकाबले के अंतिम ओवर डालने का दायित्व उन्होंने एक नए गेंदबाज जोगिंदर शर्मा को सौंप दिया था जबकि सामान्य समझ यही कहती थी कि करीब 10 साल का अनुभव रखने वाले हरभजन सिंह से वह निर्णायक ओवर कराया जाए। लेकिन धोनी का जोगिंदर पर जताया गया भरोसा सही साबित हुए और भारत ने बेहद रोमांचक मुकाबले में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को हरा दिया। उसके कुछ महीनों बाद ही धोनी की कप्तानी में भारत ने ब्रिसबेन में खेले गए त्रिकोणीय सीरीज फाइनल में ऑस्ट्रेलिया को मात देकर खिताब अपने नाम किया था। कप्तानी के अपने शुरुआती कार्यकाल में सौरभ गांगुली और वीवीएस लक्ष्मण जैसे दिग्गज खिलाड़ियों को बाहर बिठाने के लिए धोनी की काफी आलोचना भी हुई थी। लेकिन उस सीरीज में युवा खिलाड़ियों के दम पर भी खिताबी जीत दिलाने के बाद धोनी के उस फैसले पर मुहर लग गई।

शरीर में भले ही बेचैनी हो लेकिन चेहरा जंग के लिए तैयार नजर आता है। यह विरोधाभास धोनी की खासियत है

धोनी ने 2011 के वनडे विश्व कप के फाइनल में अपनी बल्लेबाजी से भारत को जीत दिलाई थी। हालांकि उस पूरे टूर्नामेंट में धोनी बल्ले से कुछ खास प्रदर्शन नहीं कर पाए थे लेकिन उन्होंने बड़े लक्ष्य का पीछा करते समय शानदार फॉर्म में चल रहे युवराज सिंह से पहले खुद उतरने का फैसला किया और उसके बाद की कहानी तो इतिहास ही बन गई। धोनी ने फाइनल मुकाबले के दबाव का बखूबी सामना करते हुए बड़े ही सधे अंदाज में बल्लेबाजी कर टीम को मजबूत स्थिति तक पहुंचाया और फिर अपने ट्रेडमार्क शैली में शानदार छक्का लगाकर भारत को विश्व चैंपियन बना दिया। इसी तरह एजबेस्टन में खेले गए 2013 के चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में धोनी की रणनीति कारगर साबित हुई। ऑफ स्पिनर आर अश्विन का बखूबी इस्तेमाल करते हुए धोनी ने सारे विशेषज्ञों के आकलन को गलत साबित कर दिया और इंग्लैंड को मात देकर भारत को चैंपियन बना दिया।

धोनी का वनडे क्रिकेट में एक बल्लेबाज के तौर पर भी प्रदर्शन इतना अच्छा रहा है कि उन्हें हमेशा सीमित ओवरों के क्रिकेट का महान बल्लेबाज माना जाता रहेगा। आखिर 50 से ऊपर के औसत के साथ 10,000 से अधिक रन बनाना कम बड़ी बात नहीं है। लेकिन धोनी ने असली कमाल तो कप्तान के तौर पर किया। उनकी पारखी नजरों ने वे चीजें भी देख लीं जो सामान्य खिलाड़ी कभी नहीं देख सकते थें। आखिर वह धोनी ही थे जिन्होंने मध्यक्रम में संघर्ष करने वाले एक बल्लेबाज रोहित शर्मा को ओपनिंग करने के लिए भेज दिया था और आज हालत यह है कि सीमित ओवरों के क्रिकेट में सारी दुनिया ओपनर रोहित के बल्ले से खौफ खाती है।

धोनी ने ही महज उपयोगी खिलाड़ी कहे जाने वाले रवींद्र जडेजा को इतनी अच्छी तरह इस्तेमाल किया कि वह दुनिया के नंबर एक टेस्ट गेंदबाज बन गए। वह अचानक ही किसी ऐसे खिलाड़ी को गेंद थमा देते थे जो उभर रही साझेदारी को तोड़ने का काम कर देता था। सुरेश रैना और केदार जाधव को याद कर लीजिए। कई बार वह क्षेत्ररक्षण भी अनूठे ढंग का लगा देते थे। अगर गांगुली ने भारतीय टीम को बेखौफ होकर खेलना सिखाया था तो धोनी ने खेल के बारे में अपनी बेहतरीन समझ, दूरदर्शिता और विश्वास के दम पर टीम इंडिया को सशक्त टीम बना दिया। हालत यह है कि आज के दौर में टीम का कप्तान नहीं होने के बाद भी धोनी की बातों पर खिलाड़ी आज भी उसी तरह ध्यान देते हैं और अक्सर आंख मूंदकर भरोसा करते हैं। विश्व कप के लीग चरण में भी वेस्टइंडीज के खिलाफ खेले गए मैच में धोनी ने स्पिनर कुलदीप यादव को ओवर की अंतिम गेंद पर गुगली डालने की सलाह दी। वह स्टंप के पीछे खड़े होकर यह कहते हुए सुने गए कि बाहर वाली गेंद डालो। कुलदीप ने भी बिना कोई सवाल उठाए उनकी बात मानी और एक तेज गुगली डाली जो दाएं हाथ के बल्लेबाज को छकाते हुए चली गई। उसके अगले ओवर में धोनी ने दूसरे स्पिनर युजवेंद्र चहल से धीमी गति वाली लेग स्पिन डालने को कहा और चहल ने भी फौरन बेहतरीन लेग-ब्रेक फेंकी। यह कहना सही होगा कि जिस तरह धोनी के मुरीदों की संख्या कम बढ़ती गई है उसी तरह उनकी आलोचना के स्वर भी तेज हुए हैं। कुछ लोग कहते हैं कि धोनी को कुछ साल पहले ही संन्यास ले लेना चाहिए था और सीमित ओवरों का क्रिकेट खेलने के लिहाज से अब उनका कुछ ज्यादा ही धीमा है। इन आरोपों में कुछ हद तक सच्चाई है लेकिन धोनी पर हमेशा की तरह इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ा है और वह चुपचाप अपने काम में लगे रहते हैं।

हालांकि विकेटकीपिंग के मोर्चे पर उनका प्रदर्शन अब भी ठोस हैं और उनकी बल्लेबाजी भी पहले की तरह असरदार न होने के बावजूद अब भी खास परिस्थितियों में प्रभावी साबित होती है। ऐसे में सवाल खड़ा होता है कि धोनी आगे कब तक खेलना जारी रख सकते हैं? आखिर उन्होंने हम भारतीयों को कई यादगार स्मृतियां दी हैं और अब तक उनका दिमाग थक जाना चाहिए, पीठ में दर्द और हाथों को थक जाना चाहिए। अब यह इतना खराब समय तो नहीं होगा कि वह आराम करें और नई पीढ़ी को खेलते हुए देखें। धोनी शायद अपने पूरे क्रिकेट जीवन में इसी सोच पर चलते रहे हैं कि 'कभी भी काम दूसरे पर न छोड़ें और उसे खुद ही पूरा कीजिए'। लेकिन अब यही अक्लमंदी लगती है कि वह इससे अलग हो जाएं।

धोनी खेल आगे भी जारी रखने के बारे में जो भी कदम उठाएं, एक बात तो तय है कि वह अपने पीछे जबरदस्त विरासत छोड़कर जाएंगे। धोनी भले ही भारत के सर्वकालिक महानतम क्रिकेटर न हों लेकिन उन्हें हमेशा ही सबसे अहम खिलाड़ी माना जाता रहेगा, ऐसा खिलाड़ी जिसने न केवल भारतीय क्रिकेट का परिदृश्य बदलकर रख दिया बल्कि दशक भर से अधिक समय तक अकेले दम पर इसका बोझ भी उठाते रहे और नए खिलाड़ियों की पहचान एवं उनको तराशने में लगे रहे।

धवन और साहा की वापसी

वेस्टइंडीज दौरे के लिए टीम घोषित

वरिष्ठ सलामी बल्लेबाज शिखर धवन के अंगूठे में फ्रैक्चर से उबरने के बाद भारत की सीमित ओवरों की टीम में वापसी हुई है जबकि चयनकर्ताओं ने आगामी वेस्टइंडीज दौरे के लिए रविवार को घोषित तीनों प्रारूपों की टीम में ऋषभ पंत को जगह देकर महेंद्र सिंह धोनी के विकल्प पर काम करने के संकेत दिए। अपने शानदार करियर के अंतिम चरण पर चल रहे पूर्व भारतीय कप्तान धोनी ने वेस्टइंडीज दौरे के लिए खुद को अनुपलब्ध रखा है लेकिन तुरंत संन्यास लेने की संभावना से इनकार किया है। वेस्टइंडीज दौरे से कप्तान विराट कोहली को आराम देने की अटकलों पर भी विराम लग गया जब इस दिग्गज बल्लेबाज को तीनों प्रारूपों में भारतीय टीम की अगुआई करने के लिए चुना गया।

युवा लेग स्पिनर राहुल चाहर वेस्टइंडीज दौरे के लिए एकमात्र नया चेहरा हैं जबकि आलराउंडर हार्दिक पंड्या को दौरे से आराम दिया गया है। श्रेयष अय्यर और मनीष पांडे की भी एकदिवसीय टीम में वापसी हुई है। उभरते हुए बल्लेबाज शुभमन गिल को हालांकि टीम में शामिल नहीं किया गया है। एमएसके प्रसाद की अगुआई वाली चयन समिति ने टी20, एकदिवसीय और टेस्ट श्रृंखला के लिए टीमों की घोषणा की। अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज रिद्धिमान साहा की भी टीम में वापसी हुई है। आईपीएल 2018 के दौरान लगी चोट से उबरने के लिए कंधे के आपरेशन के बाद उनकी टेस्ट टीम में वापसी हुई है। साहा ने पिछला टेस्ट जनवरी 2018 में दक्षिण अफ्रीका में खेला था।

राजस्थान के लेग स्पिनर चाहर को आईपीएल और घरेलू क्रिकेट में लगातार अच्छे प्रदर्शन का इनाम टी20 टीम में जगह के रूप में मिला है। वह तेज गेंदबाज दीपक चाहर के रिश्ते में छोटे भाई हैं। दीपक को भी टी20 टीम में जगह मिली है।

भारत की विश्व कप टीम में शामिल रहे दिनेश कार्तिक को बाहर कर दिया गया है जबकि हार्दिक और जसप्रीत बुमरा को उन पर काम के बोझ को देखते हुए आराम दिया गया है। बुमरा को हालांकि टेस्ट टीम में जगह मिली है। कई खिलाड़ियों को हाल में भारत ए टीम के साथ उनके प्रदर्शन के आधार पर चुना गया है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्व कप के दूसरे लीग मैच में अंगूठे में फ्रैक्चर के कारण टूर्नामेंट से बाहर हुए धवन को फिट घोषित किया गया है। *भाषा*

फॉर्म जी
अभिरुचि की अभिव्यक्ति आमंत्रण

(इन्सॉल्वेंसी एंड बैंगक्रप्सी (कारपोरेट व्यक्तियों के लिए दिवालिया संकल्प प्रक्रिया) नियमावली, 2016 के नियम 36ए(1) के तहत)

संबंधित विवरण

1.	कारपोरेट देनदार का नाम	जेट एयरवेज (इंडिया) लिमिटेड
2.	कारपोरेट देनदार के निगमन की तिथि	01 अप्रैल, 1992
3.	प्राधिकरण जिसके तहत कारपोरेट देनदार निगमित/पंजीकृत है	कारपोरेट कार्य मंत्रालय, कंपनी पंजीयक– मुंबई
4.	कारपोरेट देनदार की कारपोरेट पहचान संख्या/ सीमित देयता पहचान संख्या	L99999MH1992PLC066213
5.	कारपोरेट देनदार के पंजीकृत कार्यालय और प्रधान कार्यालय (यदि कोई हो) का पता	सिरोया सेन्टर, शहर एयरपोर्ट रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400099
6.	कारपोरेट देनदार का दिवालियापन शुरू होने की तिथि	20 जून, 2019
7.	अभिरुचि की अभिव्यक्ति आमंत्रण तिथि	20 जुलाई, 2019
8.	संहिता की धारा 25(2)(एच) के तहत संकल्प आवेदन के लिए पात्रता उपलब्ध है:	विस्तृत अभिरुचि की अभिव्यक्ति प्रक्रिया दस्तावेज में उल्लिखित पात्रता मानदंड www.jetairways.com पर उपलब्ध हैं या इसे fly.JetAirways@in.gt.com पर ईमेल कर प्राप्त किया जा सकता है।
9.	धारा 29ए के तहत लागू अपात्रता के नियम उपलब्ध हैं:	यह आईबीबीआई की वेबसाइट (https://ibbi.gov.in/legal-framework/) पर उपलब्ध है या fly.JetAirways@in.gt.com पर ईमेल से अनुरोध किए जा सकते हैं
10	अभिरुचि की अभिव्यक्ति प्राप्ति की अंतिम तिथि	3 अगस्त, 2019
11	संभावी संकल्प आवेदन की अनंतिम सूची के निर्गम की तिथि	6 अगस्त, 2019
12	अनंतिम सूची को आपत्तियाँ प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	11 अगस्त, 2019
13	संभावी संकल्प आवेदकों की अंतिम सूची निर्गम की तिथि	14 अगस्त, 2019
14	संभावी संकल्प आवेदकों को संकल्प के लिए सूचना ज्ञापन, मूल्यांकन मैट्रिक्स और अनुरोध निर्गम की तिथि	6 अगस्त, 2019
15	संकल्प योजना, मूल्यांकन मैट्रिक्स, सूचना ज्ञापन और आगे की सूचना के लिए अनुरोध प्राप्ति का तरीका	पात्र संभावी संकल्प आवेदकों को इलैक्ट्रोनिक रूप में शेयर किए जायेंगे।
16	संकल्प योजना जमा करने की अंतिम तिथि	5 सितंबर, 2019
17	संकल्प प्रोफेशनल को संकल्प योजना जमा करने का तरीका	संकल्प प्रफेशनल को संकल्प योजना मुहरबंद लिफाफे में डाक द्वारा और इसकी डिजीटल प्रति पेन ड्राइव में जमा की जाए।
18	अनुमोदन के लिए निर्णायक प्राधिकारी को संकल्प योजना जमा करने की अनुमानित तारीख	20 सितंबर, 2019
19	संकल्प प्रफेशनल का नाम और पंजीकरण संख्या	आशीष छांछरिया– IBBI/IPA001/IP-P00294/2017-18/10538
20	बोर्ड में यथा पंजीकृत संकल्प प्रफेशनल का नाम, पता और ई–मेल	आशीष छांछरिया पताः ग्रांट थॉर्नटन, 10सी हंगरफोर्ड स्ट्रीट, कोलकाता–700017 ईमेलः ashish.chhawchharia@in.gt.com
21	संकल्प प्रफेशनल से पत्राचार के लिए प्रयोग किया जाने वाला पता और ई–मेल	जेट एयरवेज (इंडिया) लिमिटेड, सिरोया सेन्टर, शहर एयरपोर्ट रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400099 ईमेलः fly.JetAirways@in.gt.com
22	अधिक विवरण उपलब्ध है	कारपोरेट देनदार की वेबसाइट www.jetairways.com पर या fly.JetAirways@in.gt.com पर ई–मेल कर मांगा जा सकता है।
23	फॉर्म जी प्रकाशन की तिथि	20 जुलाई, 2019

आशीष छांछरिया, संकल्प प्रफेशनल
(IBBI/IPA-001/IP-P00294/2017-18/10538)
आईबीबीआई में पंजीकृत पता और ईमेल आईडीः
ग्रांट थॉर्नटन, 10सी हंगरफोर्ड स्ट्रीट, कोलकाता–700017
ईमेलः ashish.chhawchharia@in.gt.com
हिते जेट एयरवेज (इंडिया) लिमिटेड

दिनांकः 20 जुलाई, 2019
स्थानः मुंबई